

# INHALT

|   |     |
|---|-----|
| Prolog                                  | 7   |
| 1. Vom Kaiser zur Sozialdemokratie      | 15  |
| 2. Eben mal die Welt retten             | 23  |
| 3. Lene und die Liebe                   | 37  |
| 4. Auf dem Weg in den Untergrund        | 47  |
| 5. Im Exil                              | 63  |
| 6. Das Exil wird zum Alltag             | 73  |
| 7. Ein Sommer in Freiheit               | 83  |
| 8. Die Kindertransporte                 | 93  |
| 9. Papaneks Pädagogik                   | 103 |
| 10. Von Eichen und Türmchen             | 119 |
| 11. Der Krieg und seine Folgen          | 133 |
| 12. Montintin                           | 149 |
| 13. Flucht nach Amerika                 | 157 |
| 14. Teller waschen und Kinder retten    | 171 |
| 15. »Masetoff zum baldigen Endsieg«     | 181 |
| 16. Eine neue Heimat                    | 195 |
| 17. Zurück nach Europa                  | 205 |
| 18. »Flüchtlinge in der eigenen Heimat« | 215 |
| 19. Vienna away from Vienna             | 229 |
| 20. Professor Papanek                   | 243 |
| 21. Was wurde aus den Kindern?          | 255 |
| 22. Rückkehr nach Wien                  | 269 |
| Epilog                                  | 279 |
| Danksagung                              | 286 |
| Anmerkungen                             | 288 |
| Bildnachweise                           | 302 |
| Die Autorin                             | 303 |